GALAXY INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (GIIRJ)
ISSN (E): 2347-6915
Vol. 9, Issue 10, Oct. (2021)

# बाल साहित्य के सरोकार

## सारांश

बाल साहित्य अर्थात् बाल मन का दर्शन, बाल मनोविज्ञान की समझ और बाल–मानसिकता को ध्यान में रखकर किया गया लेखन। यह अत्यंत प्राचीन तथा समृद्ध लेखन परम्परा है जिसका मुख्य लक्ष्य मात्र बाल पाठकों का मनोरंजन करना ही नहीं अपितु उन्हें वर्तमान जीवन की वास्तविकता से अवगत कराना है। आरंभ से ही बाल साहित्य बालक के मन, विचार और कल्पना को परिमार्जित करते हुए समाज और राष्ट्र के भावी स्वरूप की पृष्ठभूमि तैयार करता है। बाल साहित्यकार का यह दायित्व है कि वह बच्चों के प्रति चिंतनशील होकर ऐसा सार्थक बाल साहित्य सृजन करे जिससे कि उनमें रचनात्मक कल्पनाशीलता, जीवन के प्रति नयी उमंग जागृत हो और साथ ही वे नैतिक मूल्यों, भारतीय संस्कृति और सभ्यता से भी जुड़ सकें।

**कुंजीभूत शब्द –** बाल मनोविज्ञान, समृद्ध, परिमार्जित, चिंतनशील, सार्थक, कल्पनाशीलता, नैतिक मूल्य।

बाल साहित्य बालकों के सृजनात्मक विकास में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। बच्चों की मनोभूमि तक पहुँच उनके मन के अनुकूल साहित्य सृजन करना ही बाल साहित्य है, जिसकी रचना करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इस रचना का पहला पाठक बालक ही होगा। बालक अपनी बाल्यावस्था में जो संस्कार प्राप्त करता है, वह उसके सर्वांगीण विकास में

सहायक होता है, जो अंततः एक स्वस्थ समाज के निर्माण का आधार बन जाता है। बालक जितना विचारशील, परिपक्व और गहन सोच का होगा, उतना ही समाज सुविकसित तथा सुदृढ़ होगा। बाल मनोविज्ञान की यही समझ के साथ यदि बालक का मार्गदर्शन किया जाए तो उसे उसकी मौलिक रुचि तथा क्षमताओं के साथ सही दिशा की ओर मोड़ा जा सकता है जिससे उसकी मौलिक प्रतिभा और अधिक विकसित तथा विस्तृत होगी।

बच्चों के विकास में बाल साहित्य की महती भूमिका होती है अर्थात् बाल साहित्य बच्चे के मानसिक विकास में सहायक होता है। साहित्य का संबंध मन, विचार, भाव, प्रतिभा आदि मानसिक क्रियाओं से है, जिनकी अभिव्यक्ति शब्द और लिपि के माध्यम से होती है। मनोविज्ञान व्यक्ति के भाव, विचार तथा व्यवहार का विज्ञान है। अतः साहित्य विशेषकर बच्चों के लिए, बच्चों की रुचि के अनुकूल और बच्चों की ही भाषा में लिखा गया हो आवश्यक है। इसी तरह विविध विधाओं का बच्चों के मन–मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चों में सबसे लोकप्रिय विधा है, कहानी। आरंभ से ही उनमें कहानियों के प्रति अनुराग होता है, जिसका कारण है उनके मनोविज्ञान के भावुक तत्त्व जो उन्हें इस ओर आकर्षित करते हैं। इसी तरह बालगीत – कविता का अपना महत्त्व है। बच्चे उपन्यास पढ़ने में भी रुचि लेते हैं तो वहीं उनके बहुमुखी विकास में नाटकों का भी अपना विशेष योगदान है। अतः इन समस्त विधाओं की व्यवहारिक प्रयुक्ति से बालक के कोमल हृदय पर गहरी छाप पड़ती है। अंततः बालक के स्वस्थ एवं संतुलित विकास हेतु रुचिकर बाल साहित्य की आवश्यकता तथा उपादेयता असंदिग्ध है।

'साहित्य' शब्द में 'बाल' शब्द उपसर्ग के रूप में जुड़ जाता है तब वह बाल साहित्य माना जाता है। बाल साहित्य दो शब्दों के मेल से बना है – बाल+साहित्य अर्थात् जो साहित्य बालकों के लिए लिखा जाता है अर्थात् उसे बच्चे लिखें या प्रौढ़ लिखें। यह बच्चों के मनोरंजन, ज्ञानवर्द्धन, जिज्ञासावृत्ति, मानसिक विकास, व्यक्तित्व विकास एवं प्रेरणाप्रद सामाजिक बोध के लिए लिखा जाता है।

अतः प्रत्येक सभ्यता, समाज एवं संस्कृति भावी पीढ़ी के रूप में बच्चों को विशेष स्थान देती है। सामाजिक प्राणी होने के कारण सभी के मन में यही कामना होती है कि आने वाला समय आज से श्रेष्ठ हो। इसी दृष्टि से बाल साहित्य को समझने का प्रयास किया जाता रहा है। आज का बालक कल का भविष्य है, वह राष्ट्र निर्माता है। अपनी योग्यता के बल पर वह जब बुराइयों से लड़ता है और अपने समाज तथा देश में नई चेतना भरता है, तब वह राष्ट्र विकसित होकर उन्नतशील देशों के समक्ष खड़ा होने योग्य हो जाता है।

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के अनुसार, "जो साहित्य बच्चों की रुचि के अनुकूल सरल भाषा में लिखा गया हो और जो बच्चों की ज्ञान सीमा को विस्तारित करते हुए उनकी ज्ञान पिपासा को शांत करता हो, वह साहित्य बाल साहित्य कहलाता है।"[1]

डॉ. कृष्णचंद्र तिवारी (राष्ट्रबंधु) के अनुसार, "उपदेशात्मकता से बोझिल न होकर बड़ों के लिए निष्प्रयोजन, किन्तु बच्चों के लिए रुचिकर हो वह साहित्य बाल साहित्य होता है।"[2]

इसी तरह जयप्रकाश भारती लिखते हैं कि, "बालक की समस्याओं पर लिखना या किसी कला में बालक–बालिका को पात्र बना लेने से बाल साहित्य नहीं लिखा जाता। बालक

की मानसिकता को ध्यान में रखकर उसके पढ़ने के लिए उसके मनोरंजन एवं विकास के लिए जो लिखा जाता है, वही बाल साहित्य होता है।"[3]

शिवशंकर मिश्र के अनुसार, "श्रेष्ठ बाल साहित्य वह है जिसे पढ़कर बच्चों में सद्‌गुण उभरे तथा उन्हें सद्‌कार्य की प्रेरणा मिली, उनकी आकांक्षाएँ बलवती हों।"[4]

पाश्चात्य विद्वान हेनरी स्टील के मतानुसार, "बच्चों ने जिसे अपना लिया वही बाल साहित्य है। रूसी साहित्य में पौराणिक कथाओं का कोई महत्त्व नहीं है।"[5]

स्मिथ के अनुसार, "सारा साहित्य बाल साहित्य नहीं है सरल सीधे–साधे शब्दों में हम जो भी उन्हें दे दें वही बाल साहित्य हो जाएगा।"[6]

अतः संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि बाल साहित्य वह दर्पण है जो बच्चों के भविष्य को रूपायित करता है। वह काल्पनिक न होकर उद्‌देश्यपरक है। इस उद्‌देश्य की प्राप्ति के लिए जो मार्ग उपनाया जाता ह। वह निश्चय ही बाल सुलभ प्रवृत्ति के अनुकूल होता है।

बाल साहित्य से अभिप्राय है बाल मन का दर्शन, बाल मनोविज्ञान की समझ और बाल–मानसिकता को ध्यान में रखकर किया गया लेखन। यह अत्यंत प्राचीन और समृद्ध लेखन परंपरा है जिसका मूल उद्‌देश्य मात्र बाल पाठकों का मनोरंजन करना ही नहीं अपितु उन्हें वर्तमान जीवन की वास्तविकता से अवगत कराना है। बालकों की प्रारंभिक अवस्था से ही बाल साहित्य उनके मन, विचार और कल्पना को परिमार्जित करते हुए समाज और राष्ट्र के भावी स्वरूप की पृष्ठभूमि तैयार करता है।

हिंदी बाल साहित्य के आरम्भिक दौर में बच्चों के लिए नीतिपरक तथा सदाचारयुक्त साहित्य सृजन हुआ जिसमें पंचतंत्र की कहानियाँ, हितोपदेश आदि कहानियां बालसाहित्य की धरोहर के रूप में आज भी विद्यमान हैं। किन्तु समय के साथ–साथ बाल साहित्य का स्वरूप परिवर्तित हुआ। सन् 1850 से 1900 के बीच हिंदी साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र काल में बाल साहित्य को भी एक नयी दिशा मिली। हिंदी बाल साहित्य का प्रारम्भ सन् 1882 ई. में भारतेन्दु हरिश्चंद्र के प्रयास से प्रकाशित 'बाल दर्पण' से माना जाता है किन्तु इसकी विधिवत शुरूआत सन् 1915 में प्रकाशित 'शिशु' एवं सन् 1917 में पं. लल्लीप्रसाद पांडेय द्वारा प्रकाशित 'बाल सखा' पत्रिका से मानी जाती है। इसके बाद कई अन्य बाल पत्रिकाएँ निकलती हैं जिन्होंने बाल साहित्य को स्थायित्व प्रदान करने का प्रयास किया।

पंचतंत्र में विष्णु शर्मा ने कहा है, "जिस प्रकार किसी नये पात्र का कोई संस्कार नहीं रहता ठीक उसी प्रकार बालकों की स्थिति होती है। इसलिए उन्हें कथाओं के माध्यम से ही संस्कार बताना चाहिए। नीति कथाओं से परिपूर्ण बालकों की जिज्ञासा को शांत करने वाला साहित्य ही बाल साहित्य है।"[7]

आधुनिक हिंदी बाल साहित्य रचनाकारों में श्रीधर पाठक, बालमुकुंद गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' आदि ने बेहतर बाल कविताएँ रची हैं। इनके अतिरिक्त मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर', सुभद्राकुमारी चौहान, हरिवंशराय बच्चन, प्रेमचंद, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, सियारामशरण गुप्त आदि कई ऐसे साहित्यकार भी हुए जिन्होंने बाल साहित्य लेखन में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रेमचंद ने बाल साहित्य लेखन की दिशा में सर्वाधिक गंभीरता दिखाई। उनके द्वारा रचित कहानियाँ बड़े भाई साहब, प्रेरणा, ईदगाह, कुत्ते

की कहानी इत्यादि आज के यथार्थ को चित्रित करने वाली बाल कहानियाँ हैं। सन् 1960 ई. के बाद बाल साहित्य में बड़ी तीव्रता से बदलाव आया। बाल साहित्य की आवश्यकता, महत्त्व और बाल साहित्य समीक्षा की आवश्यकता को रेखांकित करने वाले लेख धर्मयुग आदि सभी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में लिखे गये और पौराणिक परिकथाओं की सार्थकता पर प्रश्नचिह्न लगाने के कारण मौलिक बाल कथा–लेखन की ओर लेखकों का ध्यान आकृष्ट हुआ। बाल साहित्य के विकास में बालसखा, शिशु, किशोर, चन्दा, लल्ला, बालहंस, बच्चों का देश, अपना बचपन, नन्हा आकाश, बाल जगत और बाल भारती जैसी पत्रिकाओं का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

हिंदी बाल साहित्य में आरम्भ से ही गंभीर समीक्षा का अभाव होने के कारण ये साहित्य कमज़ोर रहा किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हिंदी में अच्छा बाल साहित्य नहीं लिखा जा रहा है। आज वर्तमान समय में बहुत बड़ी संख्या में बाल साहित्यकार एवं बाल साहित्यिक संस्थाओं द्वारा बाल साहित्य को बच्चों तक अधिक से अधिक पहुँचाने और उनमें पढ़ने की रुचि जागृत करने के लिए निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। आज साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन के साथ ही सृजनात्मक बाल साहित्य लेखन को भी बढ़ावा मिला है। नेशनल बुक ट्रस्ट, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट एवं हिंदी संस्थान बाल उन्नयन के लिए प्रयासरत हैं। बाल साहित्यकार बाल–मन की इच्छा को ध्यान में रखते हुए साहित्य सृजन कर रहे हैं और समग्र रूप से विभिन्न विषयों पर बाल साहित्य सृजन हो रहा है। वर्तमान में श्रीप्रसाद, प्रकाश मनु, रमेश तैलंग, रमेश आजाद, श्याम सुशील, सुरेन्द्र विक्रम, शेरजंग गर्ग, बालस्वरूप राही, सूर्यकुमार पांडेय, दामोदर अग्रवाल, मेजर कृपाल वर्मा, स्वप्ना दत्ता, रेखा जैन आदि बाल

साहित्यकारों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं जो कि इस दिशा में सृजनरत हैं और अपनी बाल कहानियों, उपन्यास, कविता, नाटक, एकांकी और यात्रा वृत्तांत के माध्यम से बाल साहित्य के विकास के नये आयाम स्थापित करने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। इसी तरह दैनिक हिंदुस्तान, अमर उजाला जैसे अखबार भी बच्चों के लिए हर सप्ताह पूरा पृष्ठ छापकर बाल पत्रिकाओं की कमी को पूरा कर रहे हैं। अतः शताब्दी के अन्त तक पहुँचते–पहुँचते बाल साहित्य जहाँ समृद्ध हुआ है, वहीं लेखकों की सोच में भी काफी बदलाव आया है। बच्चों में आधुनिक दुनिया और समाज को लेकर जो जिज्ञासाएँ उत्पन्न हुई हैं उनके अनुरूप बाल साहित्य रचना की दिशा में काफी प्रयास हुए हैं। अंततः वर्तमान में जो बाल साहित्य रचा जा रहा है उसकी सोच में आधुनिकता का होना अनिवार्य है।

संवेदनशील बाल–मन तक रचना के प्रेषण के लिए बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ होना रचनाकार के लिए आवश्यक है। बच्चों में पढ़ने की रुचि पैदा करना बाल साहित्यकार का दायित्व है। अतः जो रचना बाल–मनोविज्ञान के जितने निकट होगी, वह बाल–पाठकों द्वारा उतनी ही सुगमता से ग्राह्य तथा स्वीकार्य होगी।

निष्कर्षतः आधुनिकता के इस दौर में आज बच्चे भावुकता और सहजता की अपेक्षा तार्किक और व्यवहारिक अधिक हो गये हैं इसलिए बाल साहित्य में आज आवश्यकता है नयी दिशा और सोच के साथ बच्चों में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अभिरुचि उत्पन्न करने की। बाल साहित्यकार का यह दायित्व है कि वह बच्चों के प्रति चिंतनशील होकर ऐसा सार्थक बाल साहित्य सजृन करे जिससे कि उनमें रचनात्मक कल्पनाशीलता, जीवन के प्रति नयी उमंग जागृत हो और साथ ही वे नैतिक मूल्यों, भारतीय संस्कृति और सभ्यता से भी जुड़ सकें। अतः

हिंदी बाल साहित्य रचना का आधुनिक स्वरूप निस्सन्देह इसके उज्जवल भविष्य का परिचायक है। बाल साहित्य का स्वरूप इस प्रकार का हो जिसे बालक क्रमशः वैज्ञानिक ढंग से समझ सके और जो उनकी बुद्धि के वैज्ञानिक विकास में भी सहायक सिद्ध हो सके।बाल साहित्य का उद्देश्य विश्व कल्याण, विश्व बंधुत्व और मानव को मानव बनाना साथ ही हृदय को स्नेह से जोड़ना एवं एक आदर्श समाज की स्थापना करना है तथा मैत्री, प्रेम, दया, परोपकार तथा देश प्रेम के भावों का साम्राज्य स्थापित करना है जिससे बालक अपना शैक्षिक परिवेश, अपना संसार, अपनी आकांक्षाएं, अपनी अस्मिता साहित्य के अंतर्गत पा सकें तथा मानसिक सुकून के साथ मनोरंजन प्राप्त कर सकें। अतः बाल साहित्य का निर्माण उनके स्तरानुरूप हो, जो उन्हें सद्मार्ग की ओर ले जाए वही बाल साहित्य सार्थक है, श्रेष्ठ है।

## संदर्भ

1. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, हिन्दी बाल साहित्य रचना और समीक्षा, पृ. 8
2. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन, पृ. 9
3. जयप्रकाश भारती (संपादक), भारतीय बाल साहित्य का इतिहास, पृ. 29 (प्रथम सं. 2002)
4. डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, हिन्दी बाल पत्रकारिता उद्भव एवं विकास, पृ. 15
5. हेनरी स्टील, ए आर्टिकल हिस्ट्री ऑफ चिल्ड्रन्स लिट्रेचर कोमगार, पृ. 7
6. शकुंतला कालरा, बाल साहित्य का स्वरूप और रचना संसार, पृ. 18
7. लल्लीप्रसाद पाण्डेय, बाल सखा – मासिक पत्रिका, पृ. 13

मेहनाज़ बेगम
पीएच.डी. शोधार्थी (हिन्दी), नेट, सेट
जम्मू विश्वविद्यालय
जम्मू – 180006
Phone : 9622354050
Email : mehnazbegum4050@gmail.com